श्रीमद्भगवत गीता में लोक कल्याण सम्बन्धी अवधारणा : सर्वोदय दर्शन की भावना का निरूपण

शशांक त्रिपाठी [1] , डॉ. ममता उपाध्याय [2]

[1] शोधार्थी, [2] प्रोफेसर

राजनीति विज्ञान विभाग

कुमारी मायावती राजकीय महिला महाविद्यालय, गौतम बुद्ध नगर, उ.प्र.

संबद्ध - चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय , मेरठ, (उ.प्र.), भारत

शोध सारांश : 'श्रीमद्भगवत गीता', जो 'महाभारत' महाकाव्य के 'भीष्म पर्व' का एक महत्वपूर्ण भाग है । इसमें जीवन के नैतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक पक्षों का गहन विश्लेषण है, जो उपदेश स्वरुप वर्णित है । इसमें वर्णित कर्मयोग, ज्ञानयोग और भक्तियोग न केवल व्यक्तिगत मोक्ष की ओर ले जाते हैं, बल्कि समाज के सामूहिक कल्याण का मार्ग भी प्रशस्त करते हैं । इसी प्रकार सर्वोदय दर्शन, जो सभी के उदय, कल्याण तथा विकास की भावना से परिपूर्ण है । यह दर्शन भारतीय संस्कृति की आत्मा में विद्यमान रहा है, क्योंकि भारतीय संस्कृति केवल व्यक्तिगत सुख नहीं, अपितु समस्त समाज के कल्याण व उत्थान पर जोर देती है । भारत के लगभग समस्त प्राचीन धर्मग्रन्थ सर्वोदय की इस भावना को आत्मसात किए हुए हैं, किसी में प्रत्यक्ष तौर पर, तो किसी में अप्रत्यक्ष तौर पर ही सही, पर इस भावना को स्थान मिला है । प्रस्तुत शोधपत्र में भगवतगीता के प्रमुख सिध्दांतों – निष्काम कर्म, समत्व, लोक संग्रह, आत्मज्ञान एवं त्याग आदि का विश्लेषणात्मक अध्ययन करते हुए, यह स्थापित करने का प्रयत्न किया गया है कि भगवद्गीता का दर्शन, सर्वोदय सिध्दांत से साम्यता रखता है । साथ ही शोध पत्र इस तथ्य पर भी प्रकाश डालता है कि आधुनिक समय में मानव जीवन में भगवतगीता की प्रासंगिकता किस प्रकार से है ।

मुख्य शब्द : लोक कल्याण, भगवतगीता, सर्वोदय, निष्काम कर्म, सार्वभौमिक एकत्व ।

शोध उद्देश्य : राजनीतिक आयाम में सर्वोदय का उदय 'जॉन रस्किन' की पुस्तक 'अन्टू दी लास्ट' से माना जाता है, लेकिन भारतीय समाज में इसके तत्व आदिकाल से विद्यमान हैं । प्रस्तुत शोधपत्र, हिन्दू धर्म ग्रन्थ 'श्रीमद्भगवतगीता' में सर्वोदय से साम्यता रखने वाले श्लोक और विचारों का उदाहरण प्रस्तुत करते हुए, इस बात की प्रमाणिकता को सिध्द करता है कि सभी के उदय या उत्थान की कामना, भारतीय धर्म ग्रंथों के केंद्र में रही है ।

परिचय : मानव के जीवन की दिशा व दशा, उसकी प्रवृतियाँ ही तय करती हैं और उन्हें उचित मार्गदर्शन देने में हमारे धर्म ग्रंथों का महत्वपूर्ण योगदान हो सकता है, क्योंकि हमारे धर्म ग्रन्थ केवल कर्मकांड के विधिशास्त्र नहीं, अपितु मानव जीवन को आत्मिक व मानसिक स्तर पर शुद्धता, पूर्णता और चेतना हेतु जागृत करने के साधन भी हैं । सनातन धर्म में ग्रंथों तथा शास्त्रों की अत्यंत ही प्रचुर श्रृंखला विद्यमान है । इनमें से एक तथा विश्व का सबसे बड़ा महाकाव्य 'महाभारत', केवल एक परिवार व एक राज्य की कहानी नहीं है, अपितु तात्कालिक समाज व्यवस्था, राजव्यवस्था, आचरण और कर्त्तव्यों का दर्पण है । इसी महाकाव्य के 'भीष्म पर्व' में 'श्रीमद्भगवतगीता' का उपदेश प्राप्त होता है, जो भगवान श्री कृष्ण ने अर्जुन को ज्ञान स्वरुप सुनाई थी । इसी प्रकार सर्वोदय का तात्पर्य समस्त प्राणियों के समग्र उत्थान से है, जिसमें व्यक्ति, समाज और साथ ही संपूर्ण सृष्टि का कल्याण निहित है । यह विचार सदैव से भारतीय दार्शनिक परंपरा तथा समाज की नैतिकता में विद्यमान रहा है । भगवत गीता, जो मानव जीवन के आध्यात्मिक, नैतिक एवं सामाजिक आयामों का समन्वित ग्रंथ है, सर्वोदय के इस सर्व कल्याणकारी अवधारणा को पुष्ट करता है ।

श्रीमद्भगवत गीता : हस्तिनापुर के राज सिंहासन के लिए कुरुक्षेत्र में घटित महाभारत का युद्ध, सनातन संस्कृति में सत्ता का युद्ध नहीं, अपितु धर्म युद्ध माना जाता है । जहाँ समाज में बढ़ रहे अन्याय को रोकने तथा नष्ट करने के लिए श्री कृष्ण, पांडव पक्ष में खड़े थे । सर्व विदित है कि युद्ध के आरम्भ में अर्जुन, शत्रु सेना में अपने पितामह, गुरु द्रोणाचार्य व गुरु कृपाचार्य आदि सगे-सम्बन्धियों को देखकर विचलित हो गए थे तथा युद्ध को त्याग वापस वन में जीवन व्यतीत करने को उद्विग्न हो गए थे । इस अवस्था में श्री कृष्ण द्वारा उन्हें सत्कर्म हेतु प्रेरित करने को उपदेश दिया गया था, जो भगवत गीता के नाम से प्रसिद्ध है । सामान्य जन में यह प्रचलित है कि भगवत गीता में अर्जुन को युद्ध करने का आदेश तथा धार्मिक आख्यायान से जुड़ी बाते हैं । वस्तुतः यह सत्य भी है, परन्तु अर्जुन को युद्ध के लिए सज्ज करने तथा धर्म सम्बन्धी बातों में ही श्री कृष्ण ने जीवन सम्बन्धी मत/व्याख्यान दिए हैं तथा मानव जीवन के हर पहलु में संतुलन और उस से जुड़े कर्तव्यों व तथ्यों को वर्णित किया है । आज से हजारों साल पूर्व समाज, मानव जीवन तथा धर्म सम्बन्धी दिए गये उस ज्ञान की उपयोगिता, आज भी उसी प्रकार कायम है ।

सर्वोदय की अवधारणा : सर्वोदय को एक सिध्दांत के रूप में प्रचलित करने का श्रेय निश्चय ही महात्मा गाँधी को जाता है । उनके द्वारा इसे पश्चिमी विचारक 'जॉन रस्किन' से ग्रहण किया

गया था । महात्मा गाँधी द्वारा इसके प्रयोग के हजारों वर्ष पूर्व से भी, इस शब्द से जुड़ी भावना भारतीय संस्कृति का हिस्सा रही है । सर्वोदय का शाब्दिक अर्थ है – सभी का उत्थान अथवा सभी का कल्याण या प्रत्येक का उदय । इसका सामान्य तात्पर्य है समाज/विश्व के प्रत्येक वर्ग/व्यक्ति का समान रूप से विकास करना अथवा उसे विकास हेतु अवसर की उपलब्धता प्रदान करना । सर्वोदय सभी को साथ लेकर चलने की भावना का नाम है, यदि कोई किसी कारणवश पीछे रह भी जाता है, तो उसे भी सभी के समान उठने के पर्याप्त अवसर उपलब्ध कराना । यह सिध्दांत राजनीतिक, सामाजिक तथा आर्थिक सभी आयामों को सम्मिलित करता है । सर्वोदय के प्रमुख तत्वों को निम्नलिखित तौर पर जाना जा सकता है –

- समानता
- सह अस्तित्व
- नैतिक उत्तरदायित्व
- परोपकार
- सहयोग
- सामाजिक न्याय

सर्वोदय के इन मूल आयामों पर दृष्टि डालने से यह प्रतीत होता है कि सर्वोदय एक व्यापक मानवीय दर्शन है । यह मानव के स्वार्थगत हितों पर नहीं, अपितु उसके व्यक्तिगत और सामूहिक हितों के समन्वय पर आधारित होने के साथ ही मानवता को प्रधानता देने वाली अवधारणा है ।

भगवत गीता में जगत कल्याण / सर्वोदय के मूल सिध्दांत : भगवत गीता, सर्वोदय दर्शन का एक सशक्त आधार प्रस्तुत करती है । इसके निष्काम कर्म, समत्व, लोकसंग्रह और आत्मज्ञान जैसे सिध्दांत समाज के समग्र विकास के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं । इसमें वर्णित सिध्दांतों को निम्न आधारों पर समझा जा सकता है –

1. **निष्काम कर्म :** भगवत गीता में प्रतिपादित सिध्दांतों में निष्काम कर्म के सिध्दांत का बड़ा महत्वपूर्ण स्थान है । श्री कृष्ण द्वारा अर्जुन को फल की इच्छा से रहित होकर सदैव कर्म का आश्रय लेने की प्रेरणा दी गयी है –

    - "कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन ।
      मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि ।।'' – अध्याय 2.47

यह श्लोक शाब्दिक अर्थों में व्यक्ति का कर्म में अधिकार बताता है, उन कर्मों के फल में उसका कोई अधिकार नहीं है, इसलिए उसे फल की आसक्ति से दूर रहना चाहिए । यह सिध्दांत व्यक्ति को स्वार्थ से मुक्त कर कर्तव्य के प्रति समर्पित करता है क्योंकि जब कर्म का उद्देश्य व्यक्तिगत लाभ न होकर व्यापक हित होता है, तभी समाज का कल्याण संभव है और समाज कल्याण से सर्वोदय की स्थापना संभव होती है । निष्काम कर्म का सिध्दांत सामाजिक सेवा, नैतिक आचरण और दायित्वबोध को प्रोत्साहित करता है, जो सर्वोदय दर्शन के मूल आधार हैं ।

2. **लोकसंग्रह / लोक कल्याण :** कुरुक्षेत्र में, श्री कृष्ण जब अर्जुन को उपदेश देते हैं, तो वह कहते हैं कि "उठ खड़ा हो जा और युद्ध कर" । यहाँ प्रत्यक्ष तौर पर युद्ध का आदेश दिखाई पड़ता है परन्तु ध्यान से देखें, तो अर्जुन जो एक श्रेष्ठ धनुर्धारी होने के साथ श्रेष्ठ पुरुष भी है तथा वह अपने कर्त्तव्य पथ से भटका हुआ है । श्री कृष्ण, उन्हें वह कार्य करने को कहते हैं, जो समाज को उचित मार्गदर्शन दे, युद्ध क्षेत्र में उसका कार्य युद्ध करना है, न की अश्रु बहाना । अतैव उसे समाज के मार्गदर्शन हेतु उचित कार्य करना चाहिए -

- "यद्यदाचरति श्रेष्ठः तत्तदेवेतरो जनः ।

स यत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते ।।" - अध्याय 3.21

उक्त श्लोक कहता है कि "श्रेष्ठ पुरुष जिस प्रकार का आचरण करते हैं, अन्य जन भी उसी प्रकार के आचरण को उचित मानते हैं । वह जो प्रतिरूप प्रस्तुत करता है, समुदाय उसी अनुसार व्यवहार करने लगता हैं ।" श्रेष्ठ व्यक्तियों का आचरण समाज के लिए आदर्श बनता है, इसलिए श्रेष्ठ जनों को उचित और धर्मानुसार आचरण करना चाहिए । यह सिध्दांत लोक संग्रह की भावना का निरूपण करता है, लोकसंग्रह का अर्थ है - समाज की संरचना और संतुलन को बनाए रखना तथा उसके समक्ष उचित निर्देश / उदाहरण प्रस्तुत करना । यह सिध्दांत नेतृत्व की नैतिक जिम्मेदारी को रेखांकित करता है और समाज के समग्र विकास को सुनिश्चित करता है – जो सर्वोदय का केंद्रीय तत्व है ।

3. **समत्व, सामाजिक न्याय और संतुलन :** भगवतगीता में समत्व और मानसिक संतुलन को अत्यधिक महत्व दिया गया है । अर्जुन की असमंजस पूर्ण अवस्था में, श्री कृष्ण उन्हें अपने द्वारा किए गए कर्म के साथ समभाव रखने की सीख देते हैं, जिससे उनकी मानसिक अवस्था संतुलित रहें । श्री कृष्ण कहते हैं कि -

- "योगस्थः कुरु कर्माणि संगत्यक्त्वा धनञ्जय ।

  सिद्ध्यसिद्ध्योः समो भूत्वा समत्वं यिग उच्यते ।।" – अध्याय 2.48

अर्थात्, "हे धनञ्जय ! तुम आसक्ति को छोड़कर, अपना काम सिध्द या असिद्ध होने की स्थिति को समान मानकर रहो । मानव का सुख – दुख, लाभ – हानि, जय – पराजय में समान भाव से रहना ही समत्व है ।" मानव जब कोई कार्य करता है तो उसके अच्छे परिणाम को लेकर आशान्वित होता है, परन्तु उक्त परिणाम न मिलने पर दुःख से भर जाता है, परेशान हो जाता है । ऐसी स्थिति में मानव पक्षपात, भेदभाव व असमानता, जैसी बातों का विचार नहीं कर पाता और केवल अपने लाभ से प्रेरित होकर कार्य करने लगता है । समत्व का यह सिध्दांत सभी परिस्थितियों में मानव को संतुलन बनाएं रखने की बात करता है, जिससे व्यक्ति सामाजिक न्याय और समानता को बढ़ावा दे सकें, पक्षपात और भेदभाव की भावना से रहित हो और यही सर्वोदय का अनिवार्य अंग है ।

4. **आत्मज्ञान और सार्वभौमिक एकता का बोध :** भगवतगीता का दर्शन न केवल मानसिक शांति का पक्षधर है बल्कि यह दर्शन सार्वभौमिक एकता का भी प्रतिपादन करता है । श्री कृष्ण कहते हैं कि –

- "विद्या विनय संपन्ने ब्राह्मणे गवि हस्तिनि...

  शुनि चैव श्रपाके च पण्डिताः समदर्शिनः ।।" – अध्याय 5.18

अर्थात्, "जो ज्ञानीजन होते हैं, वो विद्या व विनय से पूर्ण ब्राह्मण तथा गाय, हाथी, कुत्ते और चांडाल को समान दृष्टि से देखते हैं ।" गीता का यह सिध्दांत इस तथ्य को प्रस्तुत करता है कि सभी प्राणियों में एक ही परमात्मा का अंश है, जिससे जाति, धर्म, वर्ग व प्रजाति आदि का भेदभाव समाप्त हो जाता है । भेदभाव को समाप्त करके यह दर्शन मानवता की एकता को स्थपित करने का कार्य करता है । एक अन्य श्लोक कहता है कि –

- "ममैवांशों जीवलोके जीवभूतः सनातनः

  मनः षष्ठानीनीन्द्रिययाणी प्रकृतिस्थानि कर्षति ।।"- अध्याय 15.7

इस श्लोक में भगवान श्री कृष्ण, अर्जुन को सार्वभौमिक एकत्व का बोध कराते हुए ज्ञान देते हैं कि "मानव भले ही भिन्न - भिन्न प्रतीत होता है, परन्तु प्रत्येक देह में विद्यमान जीवात्मा स्वयं मेरा ही अंश है ।" श्री कृष्ण द्वारा उपदेशित यह ज्ञान सर्वोदय के मूल दर्शन से मेल खाता है ।

- मां हि पार्थ व्यपाश्रित्य येअपि स्युः पापयोनयः
  स्त्रियों वैश्यास्तथा शुद्रास्तेअपि यान्ति परां गतिम् ।।" - अध्याय 9.32

यह श्लोक मानव को समभाव की सीख इस प्रकार देता है कि, "स्त्री, पुरुष, शुद्र या चांडाल अथवा जो भी हो, वह मेरे द्वारा ही परमगति को प्राप्त होता है ।" अन्य अर्थों में यह श्लोक सभी जीवों को एक ही परमात्मा से उत्पन्न बताता है, जो मानव के अन्दर आत्मज्ञान का बोध कराने में सहायक है । यही सर्वोदय का आध्यात्मिक आधार भी है कि सभी मानव एक समान है, बस उनके रूप भिन्न - भिन्न है ।

5. **धर्म अनुसार आचरण की प्रेरणा :** भगवतगीता, मानव को न केवल आत्मिक स्तर पर एकत्व का बोध कराती है, बल्कि मानव को धर्म के उचित आचरण पर कायम रहने का निर्देश भी देती है । अर्जुन को उपदेश देते हुए, श्री कृष्ण कहते हैं कि -

- "श्रेयान्स्वधर्मो विगुणः परधर्मात्स्वनुष्ठीतात् ।
  स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः ।।" - अध्याय 3.35

अर्थात्, "मानव के लिए अपना धर्म ही उत्तम है, भले ही दूसरे का धर्म आकर्षित करता हो । परन्तु मानव को अपने धर्म अनुसार आचरण से यदि मृत्यु भी प्राप्त हो, तो वह कल्याणकारी है ।" यहाँ धर्म शब्द का अर्थ कर्त्तव्य से लिया जाना चाहिए, जैसे - पुत्र धर्म, छात्र धर्म । श्लोक का सन्दर्भ यह है कि सामने वाला व्यक्ति, यदि अपने धर्म से विमुख होकर आपका अपमान या अहित करें, तब भी आप अपना धर्म अर्थात् उसका कल्याण करना न छोड़ें ।

भगवत गीता में वर्णित उपरोक्त सभी सिध्दांत, एक ऐसे समाज की स्थापना करने की क्षमता रखते हैं, जहाँ प्रत्येक व्यक्ति का सम्मान और विकास सुनिश्चित हो । प्रत्येक व्यक्ति खुशहाली से जीवन यापन करें तथा भेदभाव का कोई स्थान न हो और यही बातें सर्वोदय दर्शन का भी सार हैं ।

युद्ध क्षेत्र में मानव कल्याण का उपदेश कैसे संभव : 'श्रीमद्भगवत गीता' के विषय में आम धारणा यह है कि श्री कृष्ण ने इसका उपदेश कुरुक्षेत्र में हो रहे महाभारत युद्ध में अर्जुन को युद्ध हेतु प्रेरित करने को दिया था । अर्जुन, जो पांडव सेना के महारथी थे, युद्ध के प्रारंभ में ही विपक्षी सेना में अपने सगे – सम्बन्धियों को देखकर विचलित हो गए थे और युद्ध से पीछे हटने को तैयार हो गए थे । इस धारणा से अलग एक दृष्टिकोण, इस प्रकार देखा जा सकता है कि अर्जुन को प्राप्त उपदेश राज सिंहासन के लिए घटित युद्ध के लिए नहीं, अपितु जीवन के युद्ध हेतु था । मानव जीवन, जो कभी सरल होता है, तो कभी युद्ध जैसा कठिन, कभी दुनिया से लड़ना होता है, तो कभी स्वयं की बुराईयों के विरुद्ध खड़ा होना होता है । ऐसे ही दृष्टिकोण के तहत अर्जुन केवल स्वयं के नहीं, अपितु सम्पूर्ण मानवता के प्रतिनिधि हैं । जो बाहरी तौर पर कुरु सेना से लड़ने से पीछे हट रहा है, साथ ही आन्तरिक तौर पर स्वयं से हार रहा है, स्वयं में उलझा हुआ है और अपने कर्तव्य पथ से भटका हुआ है । कुछ ऐसी ही स्थिति अक्सर मानव जीवन में होती है, मानव स्वयं को उलझा हुआ पाते हैं । अतः अर्जुन को सम्पूर्ण मानवता का स्वरुप मानकर, सभी को उचित पथ दिखाने के लिए गीता का उपदेश श्री कृष्ण द्वारा दिया गया ।

वर्तमान समय में भगवत गीता व सर्वोदय की प्रासंगिकता : आज दुनिया अत्यंत तीव्र गति से आगे बढ़ रही है और उसी गति से आज के समाज में आर्थिक विषमता और सामाजिक विभाजन बढ़ रहे हैं । मानवों के मध्य प्रेम का स्थान अब ईर्ष्या, मतभेद व वैमनस्य ने ले लिया है । आज का राजनैतिक व सामाजिक नेतृत्व पूरी तरह से नैतिकता से रहित दिखाई देता है । इस परिस्थिति में गीता का समत्व, निष्काम कर्म और लोक संग्रह जैसे सिध्दांत एक दीप के समान प्रतीत होते हैं तथा इन समस्याओं के समाधान के लिए मार्गदर्शन प्रदान करते हैं । गीता का संदेश है कि श्रेष्ठ जनों को ऐसा कार्य करना चाहिए, जो समाज के लिए मार्गदर्शक हो । आज के समय में यह माना जाता है कि नेता समाज के श्रेष्ठ जनों में से हैं, यदि वह भगवतगीता के इस संदेश को स्वीकार कर लें, तो निश्चय ही जनता भ्रष्टाचार, भाई – भतीजावाद जैसी समस्याओं से मुक्त हो सकती है । समत्व का सिध्दांत, जहाँ आर्थिक विषमता और सामाजिक भेदभाव मिटाने में कारगर सिद्ध हो सकता है, वहीं लोक संग्रह सिध्दांत समाज को आदर्श नेतृत्व प्रदान करने में सहायक है । इसी के साथ गीता का सार्वभौमिक दृष्टिकोण राष्ट्रों और समाजों के बीच सहयोग व शांति की भावना को मजबूत करता है । गीता के इन्हीं सिध्दांतों से साम्यता रखते हुए सर्वोदय की अवधारणा केवल मानव तक सीमित नहीं रह जाती है, बल्कि प्रकृति के

संरक्षण को भी सम्मिलित करती है, जो आज मानवता के अस्तित्व के लिए अत्यंत आवश्यक है । यद्यपि भगवत गीता का दर्शन सर्वोदय के सिध्दांतों को सुदृढ़ करता है, तथापि इसके व्यावहारिक अनुप्रयोग में कई चुनौतियाँ हैं –

- आधुनिक समाज में मानवों में बढ़ता स्वार्थ
- राष्ट्रों के मध्य बढ़ता तनाव, युद्ध जैसी परिस्थितियाँ
- भौतिकवादी और चरम उपभोक्तावादी दृष्टिकोण
- समाज और व्यक्तियों में नैतिक मूल्यों का ह्रास, इसके कारण भ्रष्टाचार जैसी समस्याओं का बढ़ता प्रभाव

निष्कर्ष : श्रीमद्भगवत गीता के सिध्दांतों का गहन अध्ययन करने पर यह स्पष्ट होता है कि यह ग्रंथ केवल आध्यात्मिक मार्गदर्शन ही नहीं देता, बल्कि सामाजिक और नैतिक जीवन के लिए उचित दिशा भी प्रदान करता है । आज के समय में, जब मानवता व समाज अनेक समस्याओं से जूझ रहें हैं, मानव जीवन कठिनाईयों से भरा जा रहा है । ऐसे समय में भगवत गीता और सर्वोदय दर्शन एक मार्गदर्शक प्रकाश के समान हैं, जो हमें यह शिक्षा देते हैं कि व्यक्तिगत विकास के साथ – साथ समाज व सम्पूर्ण मानवता के कल्याण के लिए भी कार्य करना आवश्यक है । निष्काम कर्म, समत्व, लोकसंग्रह, आत्मज्ञान और सार्वभौमिकता जैसे सिध्दांत व्यक्ति को न केवल आत्मोन्नति की ओर ले जाते हैं, बल्कि समाज के समग्र विकास का मार्ग भी प्रशस्त करने की क्षमता रखते हैं । आज समाज में नैतिक व आध्यात्मिक मूल्यों का जो क्षरण हो रहा है, उनके संरक्षण के लिए श्रीमद्भगवतगीता एक व्यापक आधार प्रस्तुत करता है । इस अध्ययन से स्पष्ट होता है कि भगवत गीता का दर्शन, सर्वोदय के सिध्दांतों को गहन और व्यापक आधार प्रस्तुत करता है । सर्वोदय का विचार गीता में प्रत्यक्ष रूप से भले न कहा गया हो, परंतु इसके सभी तत्व उसमें निहित हैं ।

आगे की राह : वर्तमान दौर में जहाँ पश्चिमी सभ्यता का अँधा अनुकरण ही आधुनिकता का पर्याय माना जाता है और उपभोक्तावाद जैसी चरम मानसिकता ने समाज और पर्यावरण को अत्यधिक क्षति पंहुचायी है । ऐसे समय में भगवत गीता के सिध्दांतों को समाज में निम्न प्रकार से रोपित करने के प्रयास करने चाहिए, जिससे सभी का कल्याण सुनिश्चित हो सके –

- शिक्षा प्रणाली में भगवतगीता में वर्णित नैतिक सिध्दांतों को शामिल किया जाए, जिससे बाल मन इनके प्रति गहरी आस्था से पूरित हो और उसी के अनुसार आचरण करें ।
- राजनैतिक व सामाजिक कार्यों में निष्काम कर्म की भावना को बढ़ावा दिया जाए, जिससे लोग स्वार्थ की बजाय परमार्थ की भावना से काम करें ।
- समाज के नेतृत्वकर्ताओं को लोक संग्रह व समत्व के गुणों को अपनाने की कोशिश करनी चाहिए ।

: सन्दर्भ सूची :

- मंगल, डॉ. सतीश चंद, शर्मा, धर्मेन्द्र कुमार, "गीता का शिक्षा दर्शन", स्कोलरली रिसर्च जर्नल फॉर ह्यूमैनिटी साइंस एंड इंग्लिश लैंग्वेज, अक्टूबर-नवम्बर, वॉल्यूम 1/6, पृष्ठ - 1010 - 1014, 2014
- चौधरी, डॉ. मंजु, "वर्तमान में श्रीमद्भागवतगीता के नैतिक विचारों की प्रासंगिकता", इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ एप्लाइड रिसर्च, वॉल्यूम 6(1), पृष्ठ 117-121, 2020
- शर्मा, डॉ. रविन्द्र कुमार, "गीता में कर्मयोग की दार्शनिक व्याख्या", वर्ल्ड आर्गेनाइजेशन ऑफ़ अकादमिक रिसर्च, वॉल्यूम - 13, इशू 1, जनवरी-जून, 2025
- देवी, सीमा, "श्रीमद्भागवत गीता का शिक्षा दर्शन तथा वर्तमान शिक्षा प्रणाली में उसकी उपयोगिता: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन" , इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ एजुकेशन, मॉडर्न मैनेजमेंट, एप्लाइड साइंस एंड सोशल साइंस, वॉल्यूम -04, न.- 03, जुलाई-सितम्बर, पृष्ठ 167-173, 2022
- पोद्दार, डॉ.विजयलक्ष्मी, शाही, डॉ. सुषमा, "श्रीमद्भागवत गीता के जीवन मूल्यों का वर्तमान शिक्षा प्रणाली में योगदान", उद्गम विग्यती, वॉल्यूम 2, पृष्ठ 118-121, नवम्बर, 2015
- "यथार्थ गीता-मानव धर्म शास्त्र", व्याख्याकार - स्वामी श्री अड़गडानन्द जी, प्रकाशक - श्री परमहंस स्वामी अड़गडानन्द आश्रम ट्रस्ट, अँधेरी(पूर्व), मुंबई
- "श्रीमद्भागवत गीता", गीताप्रेस, गोरखपुर

- कुमारी, डॉ. प्रतिमा, "आचार्य विनोबा भावे की दृष्टि में सर्वोदय की अवधारणा", इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ एप्लाइड रिसर्च, वॉल्यूम 3(1), पृष्ठ 974-976, 2017
- वर्मा, अमरनाथ, "जय प्रकाश नारायण के विचारों का दर्शन", इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ ह्युमनिटीज एंड सोशल साइंस रिसर्च, वॉल्यूम 7, इशू 2, पृष्ठ – 84-88, 2021
- कुमारी, डॉ. प्रतिमा, "सर्वोदय दर्शन : एक समीक्षा", इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ एडवांस्ड अकादमिक स्टडीज, वॉल्यूम 1(1), पृष्ठ – 181-185, 2019
- गाँधी, मोहनदास करमचंद, "सर्वोदय", सस्ता साहित्य मंडल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2011
- धावन, गोपीनाथ, "सर्वोदय तत्व दर्शन", सस्ता साहित्य प्रकाशन, नई दिल्ली, 1952
- रूहेला, डॉ. वंदना, "वैश्विक मानवीय समरसता के वैदिक आदर्श",इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ संस्कृत रिसर्च, वॉल्यूम - 7(5), पृष्ठ – 346-348 , 2021